Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 2, February-2019, ISSN 2230-7540

स्वातन्त्रयोत्तर हिन्दी कविता एवं रचनात्मक सरोकार

Ramita Devi*

MA in Hindi (UGC NET) PGT in Hindi

सार - स्वतन्त्रता के बाद जो काव्य रचा गया था, उसमें कुछ नई प्रवृत्तियों का समावेश था। यह नयापन विषयगत और शिल्पगत दोनों प्रकार का था। ये नयी प्रवृत्तियाँ ही किस काव्यधारा की अलग पहचान करवाने में पूर्ण भूमिका निभाती हैं।

----------X----------

कालचक्र की गति परिस्थितियों को जन्म देती है, परिस्थितियाँ सीधे मनुष्य को प्रभावित करती हैं और फिर बदले हुए मानव-जीवन और विचारपक्ष से एक नये युग की शुरूआत होती है। इस नवीन युग में नये युगबोध से प्रभावित कवि नये साहित्य की रचना करता है। इसे नयेपन से काव्य का कलापक्ष ही नहीं वरन् भावपक्ष भी प्रभावित हुआ है। स्वतन्त्रता के पश्चात् सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, धार्मिक परिस्थितियों से रस ग्रहण कर नये भावबोध को अभिव्यक्त करने वाली कविता नयी कविता कहलाती है। स्वतन्त्रता से पूर्व जो काव्य अनेक वादों से युक्त था, उसमें अब वादमुक्तता दिखायी दी। वादमुक्त होने के कारण ही नयी कविता नाम इस काव्य को दिया गया। नयी कविता के कवियों ने समाज को अपने काव्य का विषय बनाया। उन्होंने समाज के हर पक्ष का यथार्थपरक वर्णन किया है। जहाँ छायावाद का केन्द्र महामानव, प्रगतिवाद का केन्द्र समाज था, वहीं नयी कविता के केन्द्र में लघुमानव है। यह लघुमानव भाग्यवादी नहीं कर्मवादी है। जिस पर अस्तित्ववाद का प्रभाव परिलक्षित होता है। नयी कविता में अनुभूति की सच्चाई और बौद्धिकता प्रमुख है।

स्वतन्त्रता के पश्चात् जो स्वप्न नये कवियों ने संजोये थे और जिनका वर्णन अपनी कविता में किया था, उन स्वप्नों पर 1962 में भारत पर चीनी आक्रमण ने पानी फेर दिया।1 चीनी आक्रमण के पश्चात् भारतीय समाज एवं राजनीतिक क्षेत्र में तीव्र गति से हुए इस परिवर्तन को तत्कालीन साहित्य में देखा जा सकता है। स्वतन्त्रता प्राप्ति से कुछ पूर्व एवं पश्चात् के कुछ वर्षों में कवियों ने जिन रंगीन स्वप्नों का जाल बुना था वह आर्थिक समस्याओं एवं राजनीतिज्ञों द्वारा किए गए थोथे वायदों की चपेट में आकर टूट चुका था। महँगाई व युद्धों की भीषणता ने जन-सामान्य के अस्तित्व को खतरे में डालकर उनको भयभीत बना दिया था। इस भययुक्त वातावरण में जिस प्रकार का साहित्य रचा जाएगा आप उसका अन्दाजा लगा सकते हैं। कवियों ने छंद, लय आदि को तवज्जो न देते हुए सपाटबयानी से अपनी बात को कहा। जिससे यह कविता गद्यात्मक अधिक है। अपनी बात को समझाने के लिए बिम्बों का प्रयोग भी प्रचुर मात्रा में किया गया है। राजकमल चैधरी के 'मुक्ति प्रसंग' में सपाटबयानी का एक उदाहरण देखिए -

"देह की राजनीति से विकट सन्निकट और कोई राजनीति नहीं है।

संजय

अन्न और अफीम की राजनीति यहीं से शुरू होती है

जन्म लेता है यही मृग मारीच।"2

इस कविता में ऐसे बिम्बों का प्रयोग किया गया है, जो समकालीन अव्यवस्था एवं दुर्दशा का कच्चा चिट्ठा खोलकर पाठक की आँखों के सामने एक चित्र प्रस्तुत करते हैं। इस प्रकार के बिम्ब सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक विसंगतियों को बेनकाब करने में सफल हैं। रमेश गौड़ की पंक्तियाँ देखिए -

"भेड़ों का जुलूस पूरे जोर से गाता है

राष्ट्रीय गान सदन में/विभीषणों का राजतिलक हो रहा है।

सदन के बाड़े में आवारा सांड चबा रहे हैं

देश का नक्शा और संविधान और राष्ट्रध्वज।3

www.ignited.in

हिन्दी साहित्य के अन्तर्गत विकसित काव्यधाराओं में नयी कविता के पश्चात् कविता अर्थात् काव्य परम्परा को विभिन्न नाम देने का प्रयास गति पकड़ने लगा। इन्हीं नामों की पंक्ति में अकविता, साठोत्तरी कविता, सहज कविता, शुद्ध कविता, बीट कविता, भूखी पीढ़ी की कविता, ठोस कविता आदि सैकड़ों नाम दनादन साहित्यिक पत्रिकाओं में दिखाई पड़ने लगे। अकविता अथवा साठोत्तरी कविता को तो नयी कविता के बाद 1960 से 1970 में प्रवृतिगत विश्लेषण भी कर दिया गया। बदलते युग की परिस्थितियों को संजाये हुए यह एक दशक की काव्यधारा कमोबेश आज भी अकविता के नाम से जानी जाती है। लेकिन समय किसी के रोकने से नहीं रुकता। समय का प्रभाव काव्य पर पड़ता है और एक नई काव्यधारा का जन्म होता है जो अकविता को सम्मिलित करते हुए आज तक के काव्य को समेटे हुए है। इसको भी अनेक नामों विचार कविता, आधुनिकता बोध की कविता, उत्तर आधुनिकतावादी काव्य या फिर समकालीन आदि से पुकारा गया।

समकालीन शब्द का स्वरूप एवं अर्थ

समकालीन शब्द के लिए अंग्रेजी में (CONTEMPORARY) अर्थात् (A person of the same age, time) समवयस्क समकालीन। इसी प्रकार समकालीनता शब्द के लिए (कन्टपरैनीइटि) (CONTEMPORANEITY) शब्द प्रचलित है।4 समसामयिकता के लिए भी इसी का प्रयोग किया जाता है। इस प्रकार कन्टेपरेरी में दो प्रकार के भाव अन्तर्निहित हैं। कटेंट और उसकी कन्टपरेरीनेश अर्थात् मौजूदा कालखण्ड में होने वाली घटनाओं, संत्रास, पीड़ाओं, अनुभूतिजन्य वेदनाओं एवं सहसंवेदनाओं की उपस्थिति तथा उनकी अभिव्यक्ति का प्रयास। वस्तुतः समकालीनता शब्द से कालबोध शब्द का आभास होता है। हमारे समय की वरिष्ठ पीढ़ी से वर्तमान पीढ़ी और उसके चार दशकों तक के कालखण्ड में सृजन में लगी पीढ़ियों की कालावधि की समकालीनता शब्द के अन्तर्गत रखा जा सकता है।''

परमानन्द श्रीवास्तव की समकालीनता की परिभाषा स्पष्ट करते हुए लिखते हैं कि - ''गहरे ऐतिहासिक मोहभंग के परिणामस्वरूप आज की समकालीनता एक सर्वथा नयी मूल्यवता के संदर्भ के पास की है जो हमें मानव अस्तित्व की कठोर गतिविधियों या कर्म या राजनीति में हिस्सा लेने को बाध्य करती है। इन्होंने आगे कहा कि समकालीनता सिर्फ मुहावरा नहीं है बल्कि आज की संश्लिष्ट वास्तविकता में प्रवेश करने का संकल्प या प्रतिबद्ध जीवन दृष्टि है।''5

समकालीनता से अभिप्राय केवल अपने आसपास का वातावरण ही नहीं होता बल्कि वैश्विक परिवेश के परिप्रेक्ष्य में हमारे वातावरण को परखा जाता है। समकालीनता एक ऐसी भावना है जिसमें अन्तरराष्ट्रीय समस्याओं को भी अपने सापेक्ष देखा जाता है। समकालीनता शब्द में हमारे विविध ज्ञानात्मक संवेदनों के परिप्रेक्ष्य का व्यापक अर्थ अन्तर्निहित है।

डॉ. नामवर सिंह ने अपनी पुस्तक 'समकालीन कविता के स्वरूप' में लिखा है कि ''नयी कविता के अमूर्त सम्मोहन को आज की कविताएं तोड़ने का साधन बन गई है।''6

विश्वनाथ प्रसाद तिवारी 'दिशान्तर पत्रिका के पृष्ठ 15 पर समकालीन कविता का स्वरूप' प्रकट करते हुए सातवें दशक के बाद की कविता को ''नवीन काव्याभिरूचि, नवीन सौन्दर्य बोध और नये संवेदन की कविता मानते हैं।''7

प्रभाकर माचवे - ''समकालीन कविता का प्रमुख विषय है व्यवस्था का विरोध। यह सही ढंग से लेकिन इसमें कोई शक की बात नहीं है कि यह विरोध राजनीतिक है। इस प्रकार समकालीन कविता मूलतः राजनीतिक कविता है।''8

वैसे तो हर रचनाकार समकालीन होता है क्योंकि वह जिस समय विद्यमान होता, उस समय घटित होने वाली घटनाओं, परिस्थितियों को ही अपनी रचनाओं में स्थान देता है। रचनाकार कितना भी अन्तर्मुखी क्यों न हो फिर भी समकालीन समाज उसको न्यूनाधिक अवश्य प्रभावित करता है। कबीरदास और तुलसीदास के समय पर जो सामयिक राजनैतिक व आर्थिक परिस्थितियाँ थी उनको अपने काव्य में अभिव्यक्त किया।

परन्तु फिर भी डॉ. नन्द किशोर नवल ने अपनी चर्चित पुस्तक 'समकालीन काव्य यात्रा' में आठ कवियों को केन्द्रित कर समकालीन कविता को पटरी पर लाने वालों के रूप में दर्शाया गया है। ये आठों कवि अज्ञेय व मुक्तिबोध के बाद उभरकर सामने आए। इनमें विजय देव नारायण साही, कुँअर नारायण, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, रघुवीर सहाय, केदारनाथ सिंह, श्रीकान्त वर्मा, राजकमल चैधरी व धूमिल हैं। डॉ. नवल ने इस पुस्तक में आठ कवियों को केन्द्र में रखकर समकालीन काव्य यात्रा से पाठकों को परिचित करवाया है। इसमें विभिन्न कवियों की निजी विशिष्टताएँ पूरी व्यापकता से उभरकर सामने आई है। इन कवियों का अपना-अपना अलग व्यक्तित्व है पर उनकी कविताओं को समग्रता में देखें तो हमें समकालीन कविता की एक अलग दिशा का पता चलता है।

www.ignited.in

1971 के भारत-पाक युद्ध के बाद जो परिस्थितियाँ पैदा हुई उन्हीं ने समकालीन कविता की पृष्ठभूमि तैयार की। भारत पाक युद्ध के बाद धार्मिक विद्वेष, साम्प्रदायिक दंगे, विभिन्न सम्प्रदायों का धार्मिक गठजोड़, 1975 से 77 के मध्य आपातकाल, कांग्रेस के गढ़ का टूटना, सरकारों व चुनाव का दौर, एक के बाद एक सरकार बनना व गिरना, राजनैतिक भ्रष्टाचार, संसद पर हमला, प्रधानमन्त्री की हत्या आदि कुछ ऐसी घटनाएँ घटी जो आर्थिक, सामाजिक व राजनैतिक समाज को सीधे प्रभावित कर रही थी। इन्हीं परिस्थितियों के बीच 1965 से लेकर कारगिल युद्ध तक जो कविता रची गई वह समकालीन कविता कहलायी। घटनाएँ परिस्थितियों को जन्म देती हैं और उन परिस्थितियों का प्रभाव कविता पर पड़ता है। राजनीतिज्ञों की सत्तालोलुपता और अवसरवादिता के कारण साधारण जनता का विश्वास उन पर से उठ चुका है। जनतन्त्र आज सत्तातन्त्र बन गया है। कवि सुदामा पांडेय धूमिल की रचना 'पटकथा' में इसे स्पष्ट किया गया है -

"जनतन्त्र एक ऐसा तमाशा है/जिसकी जान मदारी की भाषा है।

यह एक ऐसा शब्द है जिसकी रोज/सैकड़ों बार हत्या होती है।

और वह भेड़िये की जुबान पर जिन्दा है।"9

वर्तमान में भूमण्डलीकरण, विदेशी कंपनियों व बाजारों ने भारतीय मानसिकता को नए प्रकार से गुलाम बनाना आरंभ कर दिया है। आज जो परिस्थितियाँ उत्पन्न हो चुकी हैं, वे भयावह हैं। कवि एकान्त श्रीवास्तव इस स्थिति को डायनासोर के जबड़े में आने से कम खतरनाक नहीं मानते -

"यह घूमती हुई पृथ्वी/डायनासोर के खुले हुए

जबड़े में आ गई है।"10

समकालीन कविता युगीन चेतना की पोषक है। केदारनाथ अग्रवाल ने 'फूल नहीं रंग बोलते हैं' में सर्वहारा वर्ग के पौरुष के प्रति मार्मिक शब्द चित्र इस प्रकार प्रस्तुत किए हैं-

"मैंने उसको/जब जब देखा/लोहा देखा/लोहा जैसा/तपते देखा/

गलते देखा/ढलते देखा/मैंने उसको/गोली जैसा चलते देखा।"11

मुक्तिबोध और धूमिल की कविताओं से हिन्दी कविता में एक प्रकार से प्रगतिशील कविता की धारा व्यापक और वेगवती हुई। कविता में दिन-प्रतिदिन होने वाली घटनाओं को महत्त्व देने से कविता में भावों की अपेक्षा विचारों को प्रधानता मिली है। जिसके कारण कवि सामाजिक यथार्थ की ओर उन्मुख हुए हैं। सामान्य से सामान्य एवं परिचित से परिचित स्थिति में कुछ ऐसा देख लेना कि वह पहली बार मार्मिक लगे, रघुवीर सहाय की अचूक क्षमता है। उनकी कविता का एक राजनीतिक पक्ष देखिए -

राष्ट्रगीत में भला कौन वह भारत भाग्य विधाता है।

फटा सुथन्ना पहने जिसका गुन हरचरना गाता है।

राजनीति धर्मा होने से हिन्दी कविता के क्षेत्र में एक महत्त्वपूर्ण बात यह हुठ कि नागार्जुन, केदारनाथ अग्रवाल और त्रिलोचन के महत्त्व की ओर नई पीढी का ध्यान नए सिरे से गया और वे कवि नई पीढ़ी के लिए अत्यन्त संदर्भवान हो उठे।

आधुनिक कविता ने तुक, छंद, अलंकार आदि का मोह छोड़कर गद्यात्मकता को यथार्थ चित्रण के लिए अपनाया था। लेकिन व्यक्तिवादी कवियों ने गद्यात्मकता को अपनाकर भी उसे और अमूर्त बना दिया। नागार्जुन, केदारनाथ, त्रिलोचन अधिकांशतः तुकों और छंदों में लिखते हैं। उनके यहाँ बोध और चित्रात्मकता कभी नहीं छूटते।

एक ओर जहाँ सामाजिक परिस्थितियों से आहत होकर विचारप्रधान काव्य स्वतन्त्रता के बाद लिखा जा रहा था, वहीं उसी के समानान्तर 'नवगीत' भी लिखे जा रहे थे। वैसे तो गीत आदिकाल से ही लिखे जाते रहे हैं परन्तु आधुनिक काल में आकर काव्य परम्परा में जब हर 10-15 वर्षों के अन्तराल में कविता नये-नये नाम व वादों के घेरे में बंधकर अपनी पहचान करवाने लगी, उसी दौर में गीत ने भी नई कविता की तर्ज पर 'नवगीत' नामकरण करवा लिया।

डॉ. शम्भूनाथ चतुर्वेदी ने कहा - "नवगीत को किसी आंदोलन के रूप में मैं नहीं स्वीकारता, क्योंकि गीत ही नहीं, साहित्य की किसी भी विधा को अलग-अलग शिविरों में बाँटने का मैं कतई कायल नहीं हूँ। नवगीत के लिए किसी खास नुस्खे की तलाश भी मुझे बहुत अच्छी नहीं लगती।

गणपतिचन्द्र गुप्त के अनुसार - "जब नई कविता के नेताओं ने 'गीति' को काव्य के क्षेत्र से ही बहिष्कृत करने का प्रयत्न किया तो इससे गीतकारों (नयी कविता में गीत रचने वाले कवियों) के भी आत्मसम्मान को गहरी चोट पहुँची और उन्होंने भी पूरी शक्ति से 'गीतकाव्यों' को 'नवगीत' के रूप में प्रतिष्ठित करने के लिए उन सभी साधनों एवं माध्यमों का उपयोग किया जो कि प्रयोगवाद एवं नई कविता के प्रतिष्ठानों के द्वारा प्रयुक्त हो चुके थे। निश्चय ही 'नयी कविता के पृष्ठ पोषकों द्वारा यह चुनौती न मिली होती तो

'नवगीत'' कभी भी संगठित शक्ति के रूप में उभरकर नहीं आता।''

नवगीत के उदाहरण - उमाकान्त मालवीय ने अपने गीतों में दांपत्य जीवन और समाज का वर्णन किया है -

बड़े-बड़े आश्वासन हैं, तोता मैना के किस्से,

लाठी, गोली, अश्रुगैस, इतना ही जन के हिस्से।

जनता की भूमिका यही, जूठन से भात कुछ बिने।12

राजेन्द्र प्रसाद नवगीतकारों में प्रमुख हैं। उन्होंने ग्रामीण व शहरी दोनों प्रकार का वर्णन अपने गीतों में किया है -

''सूख चले खेत सेंत-मेत के/उठ रहे बवंडर अब रेत के

चलो जरा नींद तोड़ देखें/चुप्पी में भरा शोर देखें।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि नयी कविता व समकालीन कविता में जहाँ अतिशय बौद्धिकता एवं वैचारिकता ही देखने को मिलती है वहीं नवगीत विधा में भावों का सफल चित्रण हुआ है। नयी कविता व समकालीन कविता ने जहाँ मनुष्य को अन्दर से झकझोरकर उसे आत्मसात् करवाया वहीं नवगीत विधा ने मनुष्य को भाव विभोर किया है।

निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि स्वतन्त्रता ने जहाँ मनुष्य के अन्दर नई उमंग भर दी थी और उसका आशा रूपी वृक्ष फल-फूलकर हरा भरा खड़ा हुआ था। उस पर भारत चीन युद्ध रूपी कुदाल चल गई और वह धड़ाम से गिर पड़ा। इस निराशा व मोहभंग की स्थिति ने उसके अन्तर्मन में चेतना पैदा की। इसी चेतना के फलस्वरूप उसने स्वअनुभूत को अपने काव्य में उतारा। चूँकि जन-जन उस पीड़ा को भोग रहा था जो उस समय समाज में व्याप्त थी। कवि भी उनसे अछूता नहीं था। कवियों की इस पीड़ा को छंदों, तुकों व अलंकारों में बँधी हुई भाषा प्रकट करने में असमर्थ थी। इसलिए स्वतन्त्रता के बाद की कविता में गद्यात्मकता का पुट विद्यमान है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. दुष्यंत कुमार, www.hindisamay.com, कविता
2. राजकमल चैधरी, 'मुक्ति प्रसंग'
3. रमेश गौड़, कविता, www.hindisamay.com
4. अंग्रेजी हिन्दी शब्दकोश
5. डॉ. बहादुर सिंह, हिन्दी साहित्य का इतिहास
6. वही
7. वही
8. वही
9. सुदामा पाण्डेय धूमिल, पटकथा
10. एकांत श्रीवास्तव, कविता, www.hindisamay.com
11. केदारनाथ अग्रवाल, फूल नहीं रंग बोलते हैं
12. उमाकांत मालवीय, सुबह रक्त पलाश की
13. राजेन्द्र प्रसाद सिंह, गुजर आधीरात में
14. अन्य सहायक पुस्तक हिन्दी सा. का सरल इ. विश्वनाथ त्रिपाठी
15. अशोक तिवारी, प्रतियोगिता साहित्य सीरिज

Corresponding Author

Ramita Devi*

MA in Hindi (UGC NET) PGT in Hindi

ramitadevi123@gmail.com